पर्शियन कालीन की कहानी

फारस में बहुत पहले, बालश नाम का एक दयालु और उदार राजा रहता था. हर दिन वो अपने महल का दरवाज़ा लोगों के लिए खोलता था जिससे वे उसका सबसे बेशकीमती हीरा आकर देख सकें. वो हीरा दीवारों पर इंद्रधनुष के हर रंग की रोशनी बिखेरता था.

फिर एक दिन एक चोर उस हीरे को चुरा कर ले गया. उससे पूरे देश में निराशा छा गई. फिर पायम नाम के एक छोटे लड़के ने, जो बुनकरों की गली में एक ट्रेनी था ने हीरे की रोशनी को वापस लाने का एक नायाब तरीका सोचा.

पहली बार, टॉमी डीपोला की चतुर कहानी को किसी अन्य कलाकार ने चित्रित किया है. क्लेयर इवर्ट ने अपनी शानदार पेंटिंग इस कहानी को एक शानदार फ़ारसी कालीन की सारी गर्माहट दी है.

पर्शियन कालीन
की कहानी

कई साल पहले जिस देश को कभी फारस कहा जाता था, वहां एक दयालु और बुद्धिमान राजा रहता था. वो अपने लोगों से बहुत प्यार करता था.
वो कई कमरों वाले एक सफेद पत्थर के महल में रहता था. उसका महल फूलों और फलों के पेड़ों से भरे बगीचों और चमचमाते फव्वारों से घिरा हुआ था.
राजा के पास वो सब कुछ था जो कोई आदमी चाह सकता था.

लेकिन उसके पास एक सबसे बेशकीमती और बड़ा हीरा था. वो हीरा एक विशेष खम्बे पर रखा गया था. वो इतना सुंदर और इतना उज्ज्वल था कि वो न केवल उस कमरे को उजाले से भरता था, बल्कि उससे आसपास के सभी कमरे एक-लाख इंद्रधनुष के प्रकाश से जगमगाते थे.

राजा बिल्कुल स्वार्थी नहीं था. वह अपने लोगों से बहुत प्यार करता था और उन पर पूरा भरोसा करता था. इसलिए हीरे की देखभाल के लिए उसने कोई चौकीदार नहीं रखा था. हर दोपहर, जब सूरज ढलने को होता, तब राजा अपने महल के दरवाजे खोल देता था. तब जो चाहे महल में अंदर आ सकता था हीरे की रोशनी से जगमगाती कमरे की दीवारों को निहार सकता था.

एक दिन शाम के समय, जब भीड़ महल में घुस रही थी, तब एक अजनबी आगंतुक लोगों के बीच मिल गया और उसने हीरे को चुरा लिया. उसके बाद चोर ने हवा की तरह अपने घोड़े को डूबते सूरज की ओर रेगिस्तान के चट्टानी मैदान में दौड़ाया. लेकिन फिर अचानक घोड़ा लड़खड़ाया, हीरा चोर के हाथ से गिर गया, और वह चट्टान पर बिखरकर चूर-चूर हो गया. अस्त होते सूरज में हीरे के छोटे-छोटे टुकड़े चमकने लगे और चोर की आंखों में एक साथ लाखों सूर्यास्त प्रतिबिंबित हुए. चोर को खाली हाथ लौटना पड़ा. वो अपनी किस्मत को कोसते हुए आँखें मूँद कर वहां से चला गया.

राजा के महल में सूर्यास्त के समय हीरे के अनूठे प्रतिबिंबों को देखने का रिवाज था. लेकिन अब एक लाख इंद्रधनुष के बजाए, राजा का अभिवादन करने वाला एक खाली खम्बा खड़ा था. राजा का कमरा अब परछाईयों और उदासी से भर गया था.
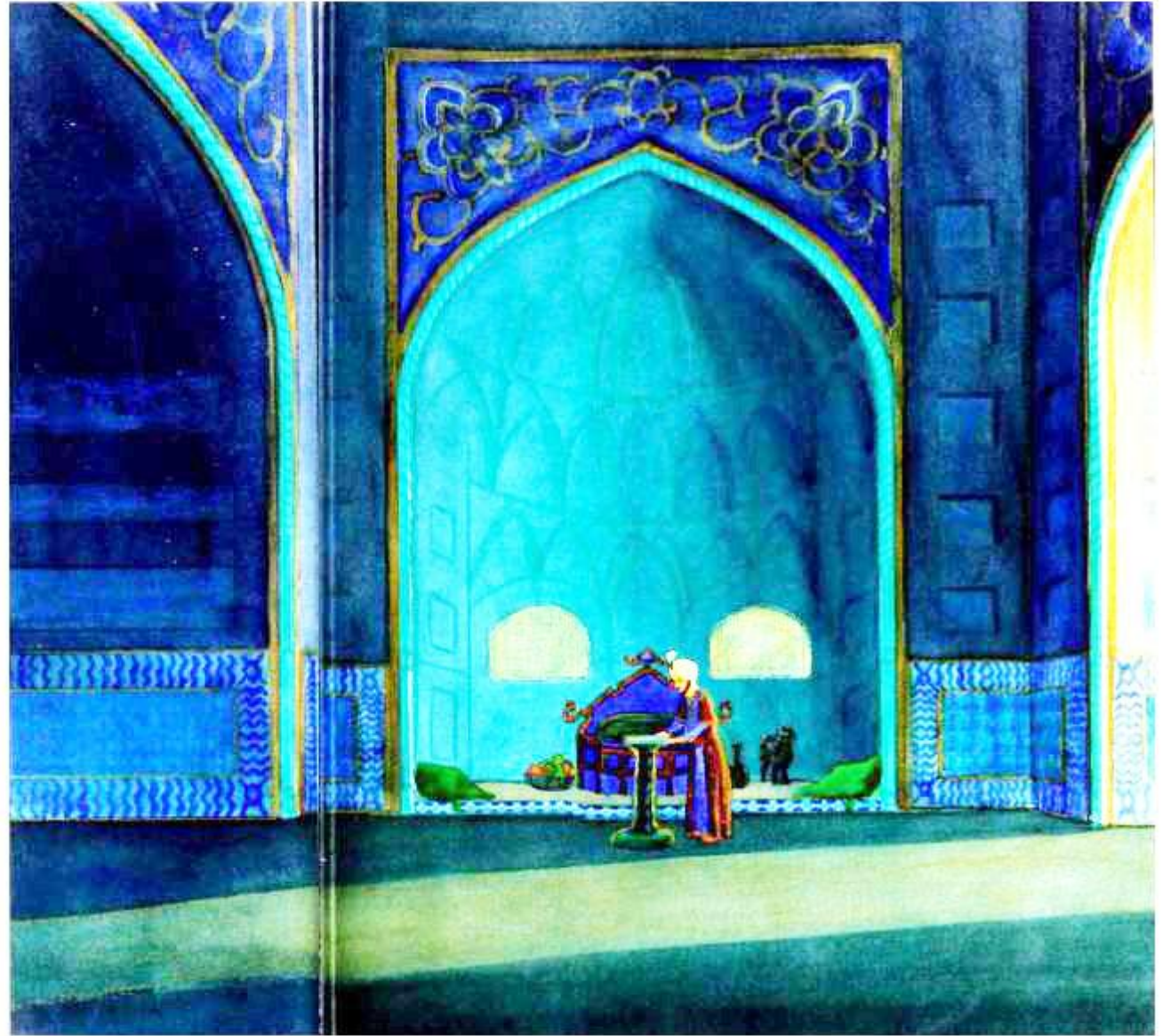
"मेरे लोगों को बुलाओ!" राजा को आदेश दिया. "मुझे उन्हें इस चोरी की घटना के बारे में बताना चाहिए. लोग उस खजाने को खोजने में ज़रूर मेरी मदद करेंगे."
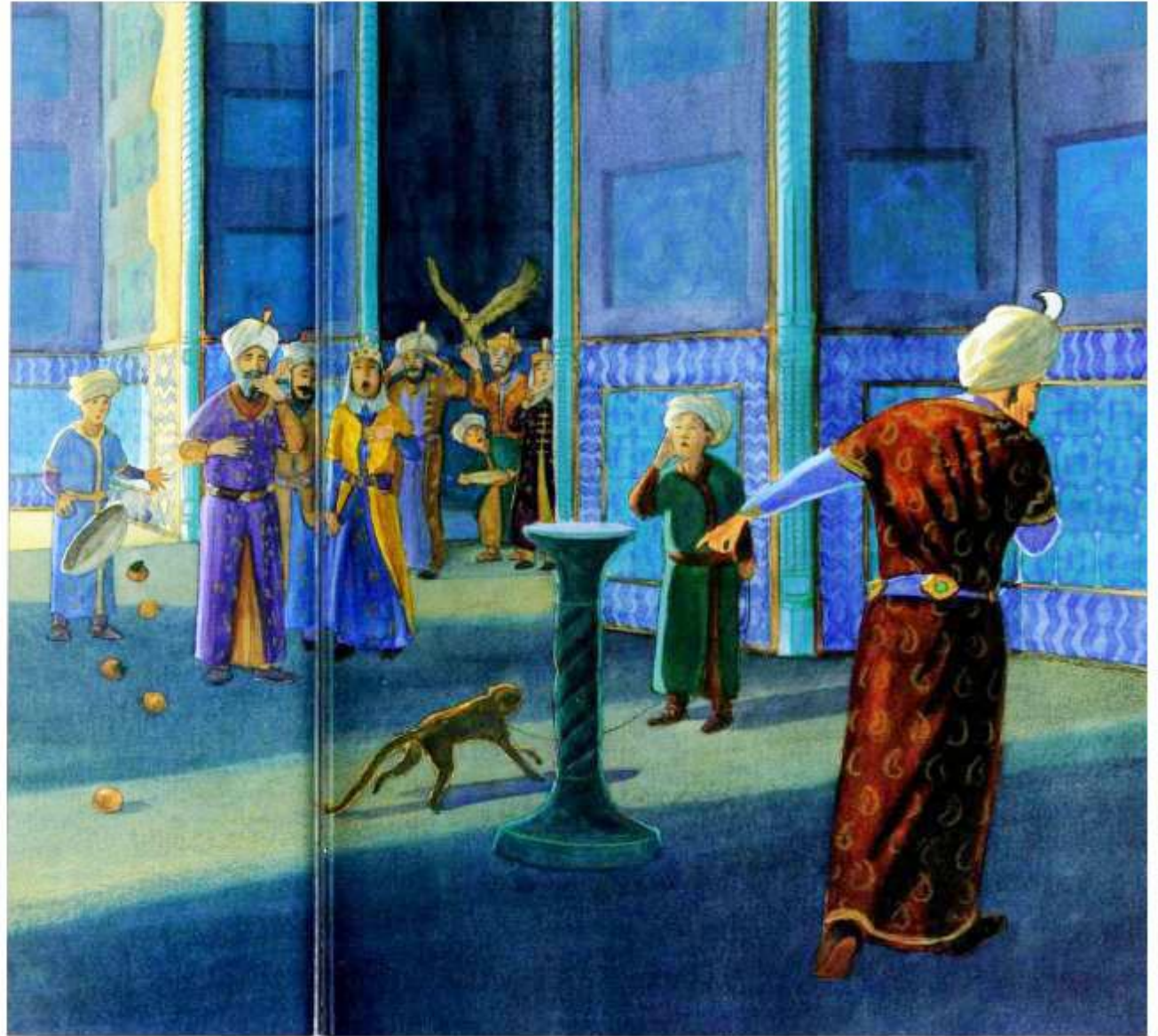
लोगों राजा के हीरे को खोजने के लिए दूर-दूर गए. जल्द ही पायम नाम का एक छोटा लड़का, जो बुनकरों की बस्ती में एक ट्रेनी था, उस चट्टानी इलाके में पहुंचा. सुबह के सूरज ने हीरे के टुकड़ों को इतना सुन्दर प्रतिबिंबित किया कि पायम को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ. वो वहां से सीधा भागा और महल में राजा के सामने पेश हुआ.
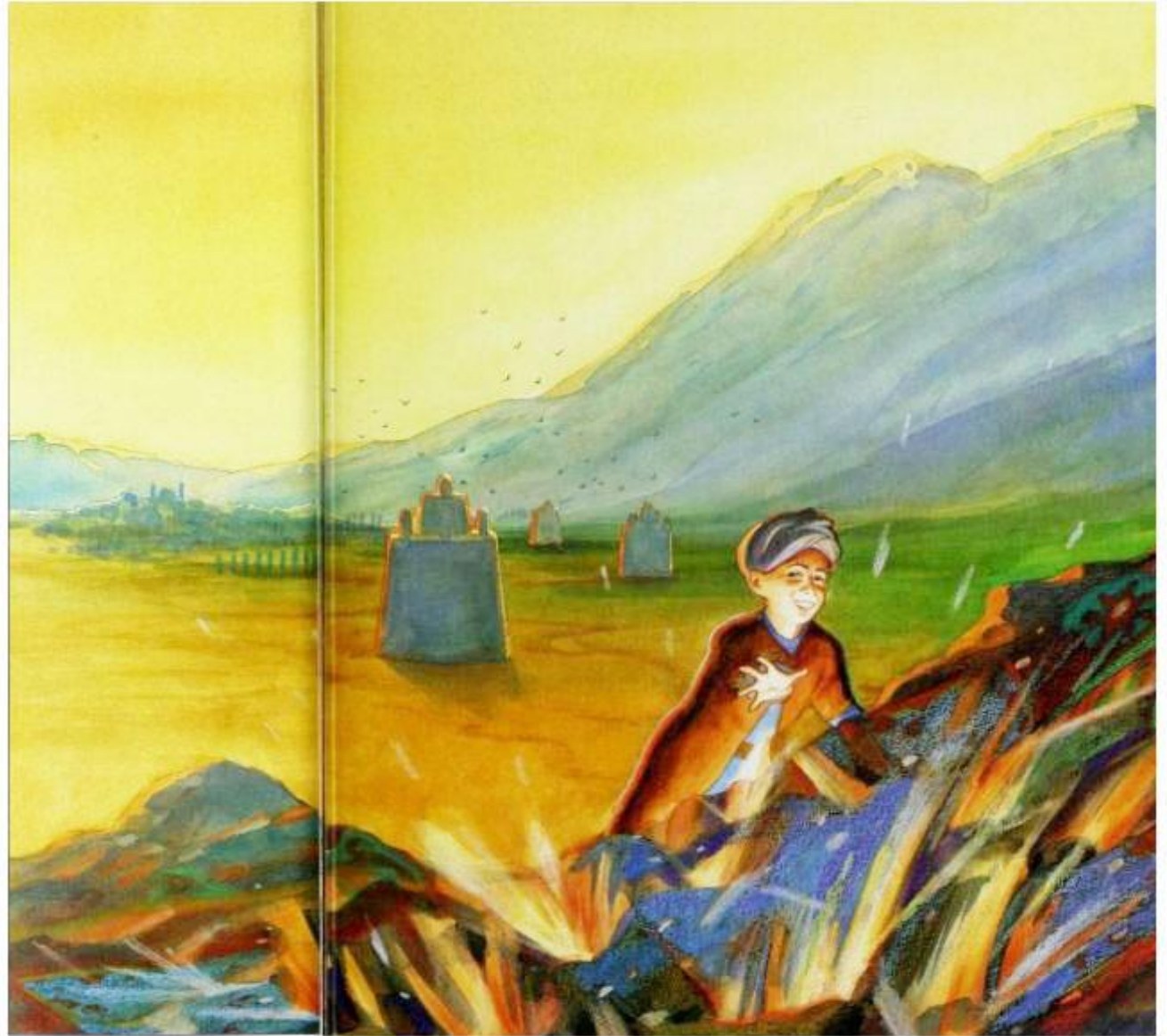
"महाराज, वहाँ पर," पायम को कहा, "चट्टानों के बीच एक हजार टुकड़ों में हीरा टूटा पड़ा है. वो धूप में चमक रहा है, और उससे जमीन पर इंद्रधनुष के सभी रंग प्रतिबिंबित हो रहे हैं."
"मैं खुद जाकर उसे देखूँगा," राजा ने कहा. "तुम भी मेरे साथ चलो."
और जब वे उस स्थान पर पहुँचे, तो राजा हीरों के कालीन से इतना अभिभूत हो गया कि वो वहीँ बैठ गया और उसने कहा, "मैं हमेशा यहां रहूंगा. मैं अब कभी भी अपने अंधेरे महल में प्रवेश नहीं करूंगा."
"लेकिन महाराज," पायम ने कहा, "आप ऐसा नहीं कर सकते! अगर आप यहाँ रहेंगे तो देश का शासन कौन संभालेगा? लोगों का मार्गदर्शन कौन करेगा?"

लेकिन राजा ने उसकी बात नहीं सुनी. राजा टिमटिमाते हुए प्रकाश की ओर देखता रहा. वो अपने ही विचारों में खोया रहा .

सभी लोग असमंजस में थे. राजा के बिना, उनके घरों पर उनके देश में रेगिस्तान का कोई डाकू-राजा हमला बोल सकता था. अब उनकी जान खतरे में थी.
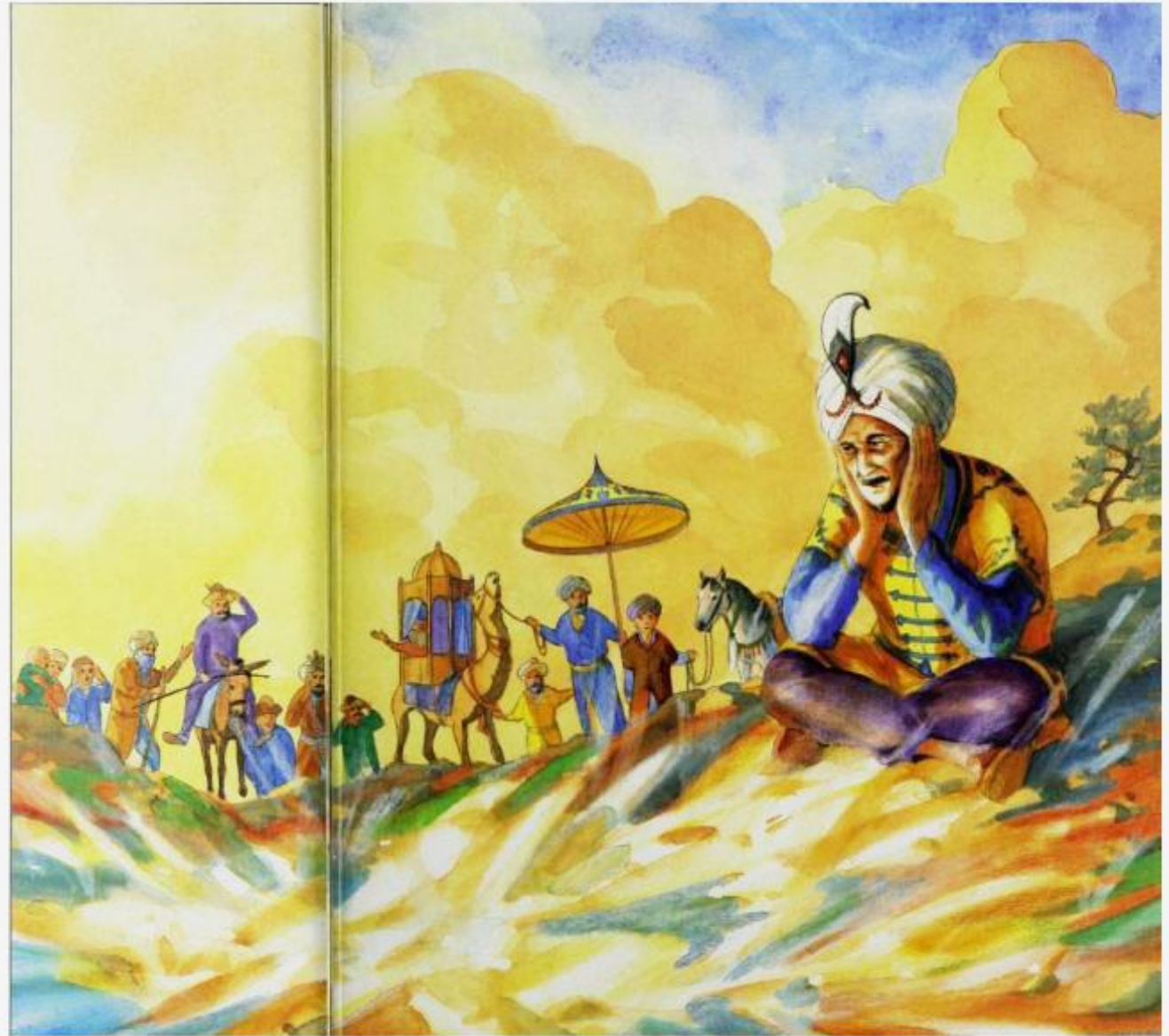
पायम ने बैठकर सोचा. उसने अन्य सभी युवा ट्रेनी छात्रों को एक साथ बुलाया.

"हमें राजा और अपने लोगों की मदद करनी चाहिए," पायम ने उनसे कहा. "हमें एक चमत्कारी कालीन बनाना चाहिए क्योंकि राजा लगातार उस चट्टानी मैदान को घूरता है. उसके लिए हम सभी को एक साथ काम करना पड़ेगा."

ट्रेनी छात्रों अपनी सहमति व्यक्त की. इस काम के लिए कालीनों के मास्टर बुनकर और रंगरेज़ भी तैयार हुए. सभी ने अपना-अपना काम तय किया.

फिर पायम, राजा के पास गया.
"महाराज आपसे विनती है की आप
सिर्फ एक साल और एक दिन के लिए
महल में वापिस चलें और सिंहासन पर
बैठें," पायम ने कहा. "यदि हम उतने
समय में महल के कमरे में रंग और
प्रकाश भरने में असफल होंगे, तो हम
अपने भाग्य को स्वीकार करेंगे और
एक राजा के बिना ही रहेंगे. सिर्फ एक
साल और एक दिन की बात है,
महाराज!"
राजा अपने लोगों के लिए कम-से-कम
इतना तो कर ही सकता था. इसलिए
राजा ने प्रस्ताव को अपनी सहमति दी.

फिर सभी लोगों ने दिन-रात काम किया - कताई, रंगाई की, और बड़े गलीचे की बुनाई की. फिर एक साल और एक दिन में, कालीन बनकर तैयार हुआ.

फिर कालीन को महल के उस अंधेरे हॉल में ले जाया गया जहां खम्बे पर हीरा रखा रहता था. फिर लोगों ने मेले जैसे माहौल में कालीन को राजा के सामने खोला.

अचानक कमरा एक बार फिर से इंद्रधनुष के रंगों से भर गया. लाल, हरे, पीले, बैगनी रेशमी कालीन के रेशे फर्श पर चमकने लगे और दीवारों और छत पर अपने रंग बिखेरने लगे. एक बार फिर से कमरा रोशनी से भर गया और राजा और उसके लोग खुश हो गए.

पर सबसे ज़्यादा खुश पायम और अन्य ट्रेनी छात्रों थे, क्योंकि उन्होंने न केवल अपने राज्य को बचाया था, बल्कि दुनिया का सबसे सुंदर कालीन भी बनाया था.

समाप्त